आज की मुरली का सार ---------- Date: 30-06-14

बाबा ने आज की मुरली में हमें कर्मों की गुहिये गति के बारे में ज्ञान देते हुए समझाया की इस सृष्टि रूपी ड्रामा चक्र में हम जीवात्माये और परमात्मा भी पार्ट बजाते है लेकिन हम जीवात्माये कर्म, अकर्म और विकर्म की गुहिये गति के चक्र में आते हैं जब कि एक परमात्मा ही इस सृष्टि चक्र में पार्ट बजाते भी निष्काम कर्म ही करते हैं.

हम जीवात्माये तीन प्रकार के कर्म करती हैं - श्रेष्ठ कर्म, अकर्म और विकर्म.

अभी संगमयुग पर हम ब्राह्मण जीवात्माये, मास्टर विश्व-कल्याणकारी का पार्ट बजाकर, बाबा के बेहद के यज्ञ की सेवा करते हैं. स्वयं को परिवर्तन कर आत्मा अभिमानी बनने का और दैवी-गुण धारण करने का पुरुषार्थ कर सतयुग की स्थापना करने में भगवान के कार्य में मददगार बनते हैं. ये कर्मों हमारे श्रेष्ठ कर्मों हो जाते हैं, जिसका प्रालब्ध हमें 20 जन्म सतयुग और त्रेतायुग में संपूर्ण सुख-शांति प्राप्त कराता हैं.

सतयुग की आदि से त्रेतायुग के अन्त तक हम जीवात्माये देवी-देवताओं के रुप देही-अभिमानी रहकर, पवित्र जीवन का पार्ट बजाते हैं, तो इस समय हम जो भी कर्म करते हैं वह अकर्म बन जाते हैं. जिसका कोई भी खाता नहीं बनता हैं. दूसरे अर्थ में कहे की ये हमारे अगले जन्म, संगमयुग के श्रेष्ठ कर्मों का प्रालब्ध हैं, इसलिए इसका कोई खाता नहीं बनता हैं की हमें उसको चुक्तु करना पड़े.

द्वापर से रावण (माया) का राज्य शुरु होता हैं, इसके कारण सब जीवात्माये देह-अभिमानी बन जाती हैं. स्वयं के सत्य स्वरूप आत्मा को भूल, इस शरीर को ही स्वयं समझ कर, इसके सुख के लिए ही कर्म करते हैं. तो देह अभिमानी जीवात्माये जो भी कर्म करती है सब विकर्म ही हो जाते हैं. जिसको जीवात्माये जन्म बाय जन्म, द्वापर से कलियुग के अन्त तक 63 जन्म भोगती रहती हैं.

बाबा ने समझाया की वह भी इस ड्रामा में पार्ट बजाने कलियुग के अन्त में आते है लेकिन उनका पार्ट इस तरह का है जो वह कर्म करते है सब निष्काम कर्म बन जाते हैं. निष्काम कर्म यानी आत्मा श्रेष्ठ कर्म करते भी सूक्ष्म में भी प्रालब्ध की कामना से परे. उसका मुख्य कारण है वह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, जीवात्मा नहीं बनते हैं. सिर्फ वह ब्रह्मा का तन का सहारा लेते है लेकिन उसके बदले में ब्रह्मा को श्रेष्ठ प्रालब्ध देते हैं. शिवबाबा अभोक्ता रहकर पार्ट बजाते है तो वह इस प्रकृति के पांच तत्वों या हम जीवात्माओं से कुछ भी लेते नहीं.

इसलिए बाबा ने आज स्पष्ट कहा की एक परमात्मा ही इस सृष्टि रुपी ड्रामा में निष्काम कर्म करते हैं, अन्य कोई भी जीवात्मा निष्काम कर्म नहीं कर सकती.

ॐ शांति.

Pls. provide your feedback to Atma Bhai on email – a.brahmin.soul@gmail.com